श्री कामेश्वर सिंह "सहायक प्रोफेसर"
विषय :- राजनीति विज्ञान ; रोहतास महिला कालेज सासाराम।
वर्ग — बी० ए० पार्ट — III "प्रतिष्ठा"
द्वारा - राजनीतिक विचारक ; डा० कुलराज जैन ; यूनिट नं०-22.
दिनांक - 09-05-2020 ; M. No - 9430436771

प्रश्न :- अरस्तू द्वारा क्रान्ति के कारणों की विवेचना करें।

उत्तर :- अरस्तू का कहना है कि असमानता की भावना ही क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों को जन्म देती है। उनके शब्दों में "यह असमानता की भूख ही है जो विद्रोह की जड़ में है।" दूसरे शब्दों में क्रान्ति का कारण असमानता है, क्योंकि इसी के कारण असन्तोष का जन्म होता है। अतः असन्तोष की भावना क्रान्ति का एक मनोवैज्ञानिक कारण है।

अरस्तू ने क्रान्तियों के कारणों को तीन भाग में बांटा है।

(i) सामान्य कारण।
(ii) विशिष्ट कारण।
(iii) विभिन्न शासन प्रणालियों में क्रान्ति के विशिष्ट कारण।

क्रान्ति के सामान्य कारण :-

अरस्तू - क्रान्तियों का मूल कारण विषमता को मानता है। समानता दो प्रकार की होती है - संख्यात्मक समानता और योग्यता सम्बन्धी समानता। उनके अनुसार योग्यता सम्बन्धी समानता का तात्पर्य आनुपातिक समानता है। संख्या के अनुसार तीन दो से उतना ही बड़ा है, जितना दो एक से, किन्तु आनुपातिक दृष्टि से चार दो से उतना ही बड़ा है, जितना दो एक से, क्योंकि दो चार का वही अंश है जो एक दो का। सभी मनुष्य इस बात पर तो सहमत हो जाते हैं कि विशेष न्याय योग्यता के अनुपात में होना चाहिए। लेकिन व्यवहारिक क्षेत्र में योग्यता के प्रश्न पर मतभेद रहते हैं।

अतएव मनुष्यत्व की दृष्टि से समान हैं तो उनके अधिकारों, धन सम्पत्ति आदि में भी समानता होनी चाहिए। किसी प्रकार की विषमता नहीं होनी चाहिए

अरस्तू और कुछ व्यक्तियों का यह मत है कि यदि कोई एक बात में कुछ धन की नजर से दूसरों से बढ़-चढ़कर है तो अन्य सभी बातों में बढ़कर होना चाहिए। दोनों विरोधी विचारधाराओं के संघर्ष के कारण विद्रोह होते हैं। जैसे - जनतंत्र में सभी व्यक्तियों का अधिकार-समान माना जाता है; किन्तु - कुलीनतंत्र एवं धनिकतंत्र में उच्चकुलों में उत्पन्न तथा धनवान व्यक्तियों के विशेषाधिकार समझे जाते हैं। अधिकारों की यह विषमता, समानता के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाली जनता को सहन नहीं होता।

अतः धनिकतंत्र एवं जनतंत्र में अधिक क्रान्तियाँ होती हैं। धनिक वर्ग में विद्रोह चार तरह से होते हैं :— (i) धनिक वर्ग में ही दो गुट हो जाते हैं और एक गुट दूसरे के विरुद्ध क्रान्ति करता है। (ii) धनिक वर्ग के विरुद्ध निर्धन वर्ग विद्रोह करता है किन्तु जनतंत्र में जनता का समूह केवल उन राज्य के धनी वर्ग के विरुद्ध क्रान्ति करता है।

जनतंत्रवादी यह समझते हैं कि सब मनुष्य समान रूप से स्वतंत्र हैं, अतः उनमें समानता होनी चाहिए। इसके उलटा धनिकतंत्र का यह विश्वास है कि मनुष्य में धन की विषमता है अतः अन्य सभी बातों में विषमता होनी चाहिए। इस प्रकार अरस्तू ने इस स्थिति से उत्पन्न होने वाली मनोदशा को क्रान्ति का सामान्य कारण (मूल) माना है।

अपनी पुस्तक 'पॉलिटिक्स' में अरस्तू ने कहा है कि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आर्थिक लाभ के लिए विद्रोह करते हैं। किन्तु उत्तम नागरिक अच्छे भोजन, वस्त्र और आवास की प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि समानता और न्याय की स्थापना के लिए क्रान्ति करते हैं। अतः अरस्तू के अनुसार छोटे लोग बराबर होने के लिए और बराबर स्थिति के लोग बड़े बनने के लिए क्रान्ति करते हैं।

classmate
Date :
Page :

② क्रान्तियों के विभिन्न कारण

अरस्तू के अनुसार क्रान्ति के विभिन्न कारण निम्न लिखित हैं।

(1) शासकों की निरंकुशता या लालच :— जब राज्य के शासक या शासन सत्ता से सम्बन्ध व्यक्तियों के व्यवहार में उदण्डता आ जाती है और वे लालच के वश में होकर सम्पत्ति की इच्छा रखते हैं तो जनता उनके विरुद्ध क्रान्ति कर देती है।

(2) शासन सत्ता की दुरव्यवस्था :— जब शासक वर्ग भ्रष्ट हो जाए, प्रशासन में घूसखोरी का प्रचलन हो तथा भाई भतीजावाद होने लगे तब जनता द्वारा क्रान्ति हो सकती है।

(3) अयोग्य व्यक्ति का शासन :— जब शासक अयोग्य हो और शासन की भागीदारी में योग्य लोगों को स्थान न दे तो क्रान्ति की सम्भावना बढ़ जाती है।

(4) मध्यम वर्ग का अभाव :— समाज का दो वर्ग — धनवान और निर्धन में बँटना भी क्रान्ति का एक कारण है। मध्यम वर्ग जो समाज में सन्तुलित अवस्था में रहता है के अभाव में निर्धन वर्ग द्वारा क्रान्ति की सम्भावना बढ़ जाती है।

(5) आर्थिक असन्तुलन :— जिस समाज में अमीरी और गरीबी के बीच खाई हो वहाँ क्रान्ति का होना स्वाभाविक है।

(6) विदेशियों का बाहुल्य :— अगर किसी राज्य में विदेशी बहुत संख्या में आ जाए तो वहाँ के नागरिकों को चुनौती मिलती है और संस्कृतियों की टकराहट क्रान्ति को जन्म देती है।

(7) सम्मान की लालसा :— अगर किसी राज्य के शासक किसी को अनुचित रूप से बिना योग्यता या कारण के सम्मानित कर देते हैं या अपमानित करते हैं तो जनता नाराज होकर क्रान्ति कर देती है।

(8) भय :— भय दो प्रकार के व्यक्तियों को क्रान्ति का कारण बनता है प्रथम, अपराध करने वाले व्यक्ति को दण्ड का भय होता है वह दण्ड से बचने के लिए क्रान्ति करता है। दूसरा, कुछ व्यक्तियों को यह डर रहता है कि उनके साथ अन्याय होने वाला है इसलिए वे प्रतिकार के लिए वे विद्रोह कर बैठते हैं। उदाहरणस्वरूप रोडस द्वीप एक कुलीन व्यक्ति को, जनता द्वारा अभियोग चलाने की धमकी देती थी अतः उन्होंने जनता के विरुद्ध षड्यंत्र किया।

Scanned by CamScanner

Classmate
Date :
Page.

(9) घृणा :— जब राज्य में एक वर्ग या एक दल बहुत दिनों तक शासन करता है तो विरोधी वर्ग या दल उनसे घृणा करने लगता है। इसके फलस्वरूप कुछ समय के बाद क्रान्ति के रूप में विस्फोट होता है।

(10) पारिवारिक झगड़े :— राजतंत्र और कुलीनतंत्र में तो प्रायः क्रान्तियाँ पारिवारिक घृणा या व्यक्तिगत ईर्ष्या के कारण होती हैं।

(11) शासक वर्ग की असावधानी :— शासक वर्ग कभी कभी अज्ञान तथा असावधानी के कारण राजद्रोहियों को महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त कर देता है इससे किसी भी समय अवसर प्राप्त होने पर वे व्यक्ति राज्य का सत्ता परिवर्तन कर देते हैं।

(12) भौगोलिक स्थिति :— अरस्तू के अनुसार राज्य नदियों, घाटियों और पर्वतों से विभिन्न हिस्सों में बटे हैं उनके लोग एक दूसरे के निकट सम्पर्क में नहीं रहते और इसलिए राज्य का कोई हिस्सा किसी बात को लेकर कभी भी क्रान्ति कर देते हैं।

(13) प्रमाद :— जनता अपने आलस्य और उपेक्षा के कारण ऐसे व्यक्तियों को सत्तारूढ़ होने दे सकती है जो वर्तमान शासन के प्रति निष्ठावान नहीं होते और शासन को बदल देते हैं।

(14) निर्वाचन सम्बन्धी षड्यन्त्र :— कभी कभी यह देखा जाता है कि निर्वाचन सम्बन्धी षड्यन्त्र भी क्रान्ति का कारण बन जाता है।

(15) परस्पर विरोधी वर्गों का शक्ति में सन्तुलित होना :— जहाँ पर एक पक्ष दूसरे पक्ष से अधिक प्रबल होता है तो निर्बल पक्ष प्रबल पक्ष के साथ लड़ाई मोल नहीं लेना चाहता लेकिन जब दोनों पक्षों में शक्ति सन्तुलन हो तो दोनों को सफलता की सम्भावना होती है और विद्रोह करके सत्ता हस्तगत करने का प्रयत्न करते हैं और क्रान्ति का रूप धारण कर लेते हैं।

इस प्रकार क्रान्तियों के विभिन्न कारणों में दिये गये उपर्युक्त कारण अधिक माना जाता है।

K.Sah

Scanned by CamScanner